आचार्य माइल्लधवल

जीवन-परिचय : द्रव्यस्वभावप्रकाशक नयचक्र के कर्त्ता माइल्लधवल हैं, जो देवसेन के शिष्य थे। माइल्लधवल का किञ्चित् भी परिचय हमें प्राप्त नहीं है। उन्होंने स्वयं भी ग्रन्थ में अपना परिचय, गुरु-परम्परा आदि कुछ भी नहीं दिया है।

माइल्लधवल द्वारा लिखित ग्रन्थ के आधार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि इनका काल 12वीं शताब्दी का मध्यकाल है।

रचना-परिचय : आपके द्वारा रचित एक ही ग्रन्थ है।

द्रव्य-स्वभाव-प्रकाशक नयचक्र : माइल्लधवल ने कुन्दकुन्दाचार्य के शास्त्र से सार ग्रहण करके अपने और दूसरों के उपकार के लिए द्रव्य-स्वभाव-नयचक्र की रचना की है।

इस ग्रन्थ में 425 गाथाएँ और 12 अधिकार हैं। इन बारह अधिकारों में गुण, पर्याय, द्रव्य, पंचास्तिकाय, सात तत्त्व, नौ पदार्थ, प्रमाण, नय, निक्षेप और निश्चय-व्यवहार नय के भेद से सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र इन विषयों का सरल भाषा में वर्णन है।